केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान द्वारा

वाक्पति मानदोपाधि से सम्मान

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी को आज **वाक्पति** विशिष्ट उपाधि से सम्मानित किया गया। यह गौरवशाली अवसर 17 फरवरी 2025 को केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी के दीक्षांत समारोह में प्राप्त हुआ। यह उनकी पाँचवीं विशिष्ट उपाधि है। इससे पूर्व नागपुर, जयपुर, कलकत्ता और हरिद्वार के प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा उन्हें **विद्या वाचस्पति** की उपाधि प्रदान की जा चुकी है।

प्रो. वरखेडी जी भारतीय संस्कृत जगत् के एक प्रखर नायक हैं। इससे पहले वे तीन प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के कुलपति के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर चुके हैं। वर्तमान में वे भारत के सबसे बड़े संस्कृत विश्वविद्यालय, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) के कुलपति के रूप में 12 जनवरी 2022 से कार्यरत हैं।

कुलपति किसी भी विश्वविद्यालय का बौद्धिक और प्रशासनिक नेतृत्व करने वाला प्रमुख व्यक्तित्व होता है और कुलपति का सम्मान वास्तव में विश्वविद्यालय का सम्मान होता है। प्रो. वरखेडी जी ने अपने नेतृत्व में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय को एक सतत प्रगतिशील एवं नवाचारशील संस्थान के रूप में विकसित किया है।

संस्कृत जगत् में एक सशक्त नेतृत्व

प्रो. वरखेडी जी केवल एक प्रशासनिक विद्वान् ही नहीं, बल्कि दर्शन के प्रखर ज्ञाता भी हैं। जहाँ अधिकतर लोग अपने-अपने शास्त्रों या दर्शनों के गुणगान तक सीमित रहते हैं, वहीं वे सभी भारतीय विद्याओं को जोड़ने और उनके विकास हेतु सतत कार्यरत हैं। न्यायशास्त्र के गहन अध्ययन और अध्यापन से उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को नए आयाम दिए हैं। वे मानते हैं कि यदि संस्कृत को न्याय मिलना है, तो इसे एक व्यापक और व्यवस्थित ढांचे में प्रस्तुत करना होगा।

संस्कृत को समृद्ध करने की उनकी दृष्टि केवल पारंपरिक शास्त्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने आयुर्वेद, प्रबंधन, अर्थशास्त्र, योग और अन्य पारंपरिक विद्याओं को भी औपचारिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ने का कार्य किया है। यही कारण है कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अब एक मेरु (Multi-disciplinary and Research University – बहुविषयक अध्ययन एवं शोध विश्वविद्यालय) के रूप में उभर रहा है।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उन्नयन की पहल

प्रो. वरखेडी जी के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती यह भी है कि वे भारतीय मूल विद्याओं को प्रत्येक प्रदेश में पुनः स्थापित करें और भारतीय भाषाओं को उनके मूल स्वरूप के साथ संरक्षित करें। वर्तमान में भारतीय भाषाओं पर अनेक भाषण होते हैं, अनुवाद कार्य भी जारी है, किंतु अब तक भारतीय भाषाओं के लिए कोई ठोस डाटाबेस (Database)नहीं बना है। यह अत्यंत आवश्यक है कि IndianLanguages.com जैसे प्लेटफॉर्म पर भारतीय भाषाओं का लिपिबद्ध वाङ्मय उनकी मूल लिपि में searchable हो। आज यदि संस्कृत, हिंदी, तमिल, कन्नड़, गुजराती जैसी भाषाओं के साहित्य के लाखों लेख उपलब्ध भी हैं, तो वे प्रायः अंग्रेज़ी में होते हैं। संस्कृत में लिखित सामग्री को संस्कृत में खोजने की सुविधा तभी मिलेगी, जब संस्कृत का स्वयं का एक स्वतंत्र डेटाबेस विकसित किया जाएगा।

संस्कृत सहित सभी भारतीय भाषाओं को डिजिटल युग से जोड़ना अनिवार्य हो गया है। यदि हमारे ज्ञान का Impact Factor बनाना है, तो डिजिटल संसाधनों का सही उपयोग करना होगा। वर्तमान में हम मौखिक एवं कागजी संचार तक ही सीमित हैं, जबकि डिजिटल माध्यमों का व्यापक प्रयोग किया जाना चाहिए।

डिजिटल युग में संस्कृत का भविष्य

प्रो. वरखेडी जी अभिकलनात्मक विज्ञान (Computational Science) एवं प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण NLP (Natural Language Processing) के विशेषज्ञ हैं। यह सर्वविदित है कि वे संस्कृत के विद्वानों को डिजिटल माध्यमों से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सङ्घे शक्तिः कलौ युगे—इस युग में संगठन और तकनीकी विकास के बिना संस्कृत को उसका उचित

स्थान नहीं मिल सकता। इसलिए, संस्कृत को डिजिटल संसार से जोड़ने के लिए प्रो. वरखेडी जी को इस कार्य का नेतृत्व करना होगा।

इस दिशा में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) एवं भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को भी सक्रिय सहयोग देना होगा, तभी यह कार्य सफल हो सकता है। यदि भारतीय भाषाओं और शास्त्रों को विश्व पटल पर प्रभावशाली बनाना है, तो इस कार्य में सभी भारतीय भाषा विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं को भी सहभागी बनना होगा।

संस्कृत और भारतीय विद्याओं का उज्ज्वल भविष्य

प्रो. वरखेडी जी को इससे पहले राष्ट्रपति पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनके मान-सम्मान से न केवल संस्कृत बल्कि संपूर्ण भारतीय ज्ञान परंपरा को गौरव प्राप्त हो रहा है। आने वाले समय में वे और भी उच्च दायित्वों का निर्वहण करेंगे, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि **भविष्यं संस्कृताश्रितम्** अर्थात् भविष्य संस्कृत के आधार पर ही निर्मित होगा। उनकी यह उक्ति सत्य सिद्ध हो सके।

संस्कृत के इस महामण्डलेश्वर के नेतृत्व में भारतीय विद्याओं की पुनः प्रतिष्ठा संभव है। यदि हम सभी इस दिशा में उनका सहयोग करें, तो निःसंदेह भारतीय ज्ञान परंपरा एक नए स्वर्णिम युग में प्रवेश करेगी।

आचार्य गणेश ति. पण्डित
संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक परियोजना), प्रकाशन अनुभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, देहली

https://www.youtube.com/live/_3XrLajCAkc?si=u6kNF7Y3W_w-dkj9

बुद्धो भवेयं जगतो हिताय

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा-संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་། ཝཱ་ར་ཎ་སཱི། སཱ་ར་ནཱ་ཐ།

Prof. Wangchuk Dorjee Negi
Vice-Chancellor

TI/VC/ACAD-55/133/2025
February 01, 2025

Dear Prof. Shrinivasa Varakhedi ji,

Namaskar!

I am delighted to receive your reply via email dated January 27, 2025 vide which you have kindly accepted to receive the Honorary Degree and deliver a Convocational Address during the 16th Convocation of the Institute.

In the above context, I would like to inform you that the Hon'ble Minister of Culture, Government of India in the capacity of the Chancellor of the Central Institute of Higher Tibetan Studies (CIHTS), Sarnath, Varanasi has kindly consented to chair the **Convocation Ceremony to be held on February 17, 2025 at 11.00 AM in the Atisha Hall** of the Institute.

In view of the above, it is requested to kindly send the text of your Convocation Address **preferably in Sanskrit** by 8th of February, 2025 to facilitate further necessary preparations at our end. For the ease of understanding by the larger community, it shall be appreciated if the Convocation Address is delivered in Hindi/English during the ceremony. Further, the Institute is in receipt of your C.V. sent on 16 March, 2023, however, in order to include latest information, we would like to have your updated C.V. for preparation of Citation.

We earnestly hope that you will grace us with your esteemed presence and contribute for making the 16th Convocation a truly memorable and momentous occasion. For making the befitting arrangements of boarding & lodging, you are requested to kindly share your itinerary as soon as possible. The Institute will bear the travelling expenses in lieu of the above visit. A brief profile of the CIHTS is attached herewith for your kind perusal.

With warm regards,

Yours Sincerely,

(Prof. Wangchuk Dorjee Negi)
Vice- Chancellor

Encl.: As above

To,
Prof. Shrinivasa Varakhedi
Vice-Chancellor
Central Sanskrit University
New Delhi